पोल्ट्री क्या है?

पोल्ट्री उन पक्षियों को संदर्भित करता है जो मांस और
अंडे के लिए व्यावसायिक या घरेलू स्तर पर पाले जाते हैं।
मुर्गियां, बत्तख, टर्की और गीज़ सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक जानवर हैं।पोल्ट्री कई जानवरों द्वारा दुनिया का सबसे बड़ा घरेलू पशु स्टॉक है, और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में पोल्ट्री मांस वैश्विक मांस उत्पादन का सबसे तेजी से बढ़ने वाला घटक था।

कुक्कुट पालन क्या है?

कुक्कुट पालन मानव उपभोग के लिए मांस या अंडे के उत्पादन के उद्देश्य से पशुपालन की एक उपश्रेणी के रूप में मुर्गियों, टर्की, बत्तखों और गीज़ जैसे कुक्कुटों को पालने की प्रथा है।
इसमें कम पूंजी की आवश्यकता होती है और कम समय में बड़ी संख्या में ग्रामीण निवासियों को छोटी आय और नौकरी के अवसर प्रदान करता है। अधिकांश पोल्ट्री फ़ैक्टरी फ़ार्मों पर पाले जाते हैं।
वर्ल्ड वॉच इंस्टीट्यूट के अनुसार, यह विधि दुनिया के 75% पोल्ट्री मांस और दुनिया के 70% अंडे का उत्पादन करती है।
जबकि फसल उत्पादन प्रति वर्ष 1.5 से 2% की दर से बढ़ा है, अंडे और ब्रायलर उत्पादन प्रति वर्ष 8 से 10% की दर से बढ़ा है। नतीजतन, भारत अब अंडे का दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
पोल्ट्री मांस वैश्विक मांस मांग का सबसे तेजी से बढ़ने वाला घटक है, और दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा विकासशील देश भारत तेजी से अपने पोल्ट्री क्षेत्र का विस्तार कर रहा है।
भारत में बढ़ती आय और तेजी से बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग पोल्ट्री क्षेत्र के विकास को चला रहा है, जैसा कि लंबवत एकीकृत पोल्ट्री उत्पादकों का उदय है जिन्होंने उत्पादन और विपणन लागत को कम करके उपभोक्ता कीमतों को कम किया है।
एकीकृत उत्पादन, जीवित पक्षियों से प्रशीतित और जमे हुए उत्पादों के लिए बाजार संक्रमण, और नीतियां जो प्रतिस्पर्धी मूल्य वाले मकई और सोयाबीन की आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं, भारत के कुक्कुट उद्योग के भविष्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पोल्ट्री क्षेत्र की महत्ता और भविष्य:

श्रम: कुक्कुट उद्योग, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 3 मिलियन लोगों को रोजगार देने के अलावा, कई भूमिहीन और सीमांत किसानों के लिए आय के पूरक के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है।

पोषण सुरक्षा: एक संकटग्रस्त किसान परिवार के लिए, पशुधन द्वारा प्रदान किया जाने वाला भोजन जीवित रहने के लिए आवश्यक पोषण का एकमात्र स्रोत है और पोषण सुरक्षा भी प्रदान करता है।

आय का विश्वसनीय स्रोत: इसके अलावा, भूमिहीन मजदूर अपनी आय का आधे से अधिक पशुधन, विशेष रूप से मुर्गी पालन से प्राप्त करते हैं।

संपत्ति: संकटग्रस्त किसान के लिए पशुधन एक महत्वपूर्ण संपत्ति है क्योंकि इसे किसी भी समय भुनाया जा सकता है और उसे कर्ज से बाहर निकलने में मदद मिल सकती है।

पोल्ट्री उद्योग में ग्रोथ ड्राइवर्स

भारत में, कुक्कुट क्षेत्र के विकास को विभिन्न कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसमें बढ़ती आय और तेजी से बढ़ते मध्यम वर्ग के साथ-साथ लंबवत एकीकृत कुक्कुट उत्पादकों का उदय शामिल है, जिन्होंने उत्पादन और विपणन लागत को कम करके उपभोक्ता कीमतों को कम किया है।
एकीकृत उत्पादन, जीवित पक्षियों से प्रशीतित और जमे हुए उत्पादों के लिए बाजार परिवर्तन, और ऐसी नीतियां जो प्रतिस्पर्धी मूल्य वाले मकई और सोयाबीन की आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं, भारत में भविष्य के पोल्ट्री उद्योग के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।
समवर्ती रूप से, भारत का असंगठित कुक्कुट क्षेत्र कई भूमिहीन/सीमांत किसानों के लिए माध्यमिक आय सृजन के साथ-साथ ग्रामीण गरीबों को पोषण सुरक्षा प्रदान करने का एक शक्तिशाली साधन है।
कोई भी भविष्य कहनेवाला अनुमान लगाते समय, अनुभवजन्य और सांख्यिकीय दोनों तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए।

भारत में पोल्ट्री क्षेत्र की स्थिति

भारत में दुनिया की सबसे बड़ी पशुधन आबादी है।
भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा अंडा उत्पादक और छठा सबसे बड़ा ब्रायलर उत्पादक है।
वाणिज्यिक पोल्ट्री फार्म अंडे के उत्पादन में 75% योगदान करते हैं, जबकि घरेलू / पिछवाड़े पोल्ट्री फार्म शेष 25% योगदान करते हैं, और ब्रॉयलर उत्पादन 4.9 मिलियन मीट्रिक टन (ब्रॉयलर उत्पादन में चौथा) है।
लेयर मार्केट प्रति वर्ष 6-7 प्रतिशत की दर से बढ़ता है, जबकि ब्रायलर बाजार प्रति वर्ष 8-10 प्रतिशत की दर से बढ़ता है।
देश का कुल पोल्ट्री फीड उत्पादन 24 मिलियन टन है। भारतीय पोल्ट्री उद्योग की कीमत 1.25 लाख करोड़ रुपये (18.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर) है।
20वीं पशुधन गणना के अनुसार, भारत में 851.8 मिलियन कुक्कुट पक्षी हैं।
इसका लगभग 30% 'बैकयार्ड पोल्ट्री' या छोटे और सीमांत किसानों से आता है।
पोल्ट्री फार्म मांस और अंडे के लिए मुर्गियां, टर्की, बत्तख और कलहंस पालते हैं।
उच्चतम पोल्ट्री आबादी वाले राज्य तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, असम और केरल हैं।
वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान, देश ने दुनिया भर में 320,240.46 मीट्रिक टन पोल्ट्री उत्पादों का निर्यात किया, जिसका कुल मूल्य रु। 529.81 करोड़/71.04 मिलियन अमरीकी डालर।
ओमान, मालदीव, इंडोनेशिया, वियतनाम, भूटान, जापान और रूस भारत के लिए प्रमुख निर्यात गंतव्य हैं ।
संक्षेप में, पोल्ट्री और मांस भारत में लंबवत रूप से एकीकृत उद्योग हैं जिन्होंने हाल के वर्षों में जबरदस्त वृद्धि देखी है।
भारत का पोल्ट्री उद्योग, विशेष रूप से, एक बड़ी सफलता की कहानी है।

कुक्कुट क्षेत्र - चुनौतियाँ

- एवियन इन्फ्लुएंजा (बर्ड फ़्लू) जैसी बीमारियों के प्रकोप के परिणामस्वरूप कुक्कुटों की मौत हो जाती है, ऑर्डर रद्द कर दिए जाते हैं और मूल्य बढ़ जाते हैं, इन सभी का उद्योग पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- एक अन्य समस्या कच्चे माल की कमी है । सोयाबीन मील की कीमत बढ़ गई है, जिससे फ़ीड निर्माताओं को पक्षियों के आहार में बदलाव करने के लिए मजबूर होना पड़ा है।
- एक अन्य मुद्दा उन क्षेत्रों में पशु चिकित्सकों और शोधकर्ताओं की कमी के कारण मानव संसाधन की कमी है जहां विशेषज्ञता ज्ञान की आवश्यकता है।
- भारतीय पोल्ट्री क्षेत्र अभी भी अंतरराष्ट्रीय बाजार का लाभ उठाने में असमर्थ है। भारत में पोल्ट्री क्षेत्र को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक पर्याप्त कोल्ड स्टोरेज और गोदामों की कमी है।
- अतिरिक्त आय के लिए अधिकांश उत्पादन असंगठित क्षेत्र में बैकयार्ड पोल्ट्री के रूप में किया जाता है।
- कुक्कुट उत्पादों में एंटीबायोटिक दवाओं के स्तर में वृद्धि के दीर्घकालिक नकारात्मक परिणाम होते हैं, जैसे मनुष्यों में दवा प्रतिरोध।

- स्वच्छता बनाए रखने और व्यापार लाइसेंस देने के लिए व्यापक नियामक प्राधिकरण का अभाव।
- पक्षियों की उनके कचरे और अन्य पक्षियों से निकटता उपभोक्ताओं के लिए साल्मोनेला जैसे एजेंटों के जोखिम को बढ़ाती है।

सरकार समर्थित अवसंरचना

नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (NABARD) ने पोल्ट्री उद्योग को समर्थन देने के लिए बुनियादी ढांचा तैयार किया है।

कुक्कुट बीमा को भारतीय ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आईआरडीपी) के हिस्से के रूप में पेश किया गया है, क्योंकि बैंकों और राष्ट्रीय सहकारी विकास सहयोग (एनसीडीसी) ने गांवों में छोटे और सीमांत किसानों को वित्तपोषण करना शुरू कर दिया है।

भारतीय सामान्य बीमा निगम (जीआईसी) ने कुक्कुट बीमा की शुरुआत की है, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं:
पोल्ट्री किसानों के लिए व्यापक कवर;
हैचरी के माध्यम से महामारी कुक्कुट बीमा; और
हैचरी के माध्यम से मूल स्टॉक के लिए पोल्ट्री बीमा योजनाएँ।
पोल्ट्री पहल

पोल्ट्री वेंचर कैपिटल फंड (पीवीसीएफ):
पशुपालन और डेयरी विभाग इसे राष्ट्रीय पशुधन मिशन के "उद्यमिता विकास और रोजगार सृजन" (ईडीईजी) के हिस्से के रूप में लागू कर रहा है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन:
राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम जो ग्रामीण पिछवाड़े कुक्कुट विकास (आरबीपीडी) और अभिनव पोल्ट्री उत्पादकता परियोजनाओं (आईपीपीपी) के कार्यान्वयन के लिए राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

इसकी कम निवेश आवश्यकता और कम अवधि की अवधि के कारण, भारत में कुक्कुट पालन तेजी से आर्थिक विकास उत्पन्न करने की अपनी विशाल क्षमता के कारण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, विशेष रूप से कमजोर वर्गों को लाभान्वित करता है। संरचना और संचालन के संदर्भ में, भारतीय कुक्कुट उद्योग में प्रतिमान बदलाव आया है। लगभग चार दशकों में भारत के कुक्कुट उद्योग का एक साधारण पिछवाड़े की गतिविधि से एक प्रमुख व्यावसायिक गतिविधि में परिवर्तन बहुत तेजी से प्रतीत होता है। इस प्रकार के परिवर्तन के लिए प्रजनन, हैचिंग, पालन और प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है।